अध्याय 6

प्रतिस्पर्धारहित बाज़ार

हमें याद है कि पूर्ण प्रतिस्पर्धा के सिद्धांत का निर्माण एक बाज़ार की संरचना के रूप में किया गया था जहाँ उपभोक्ता और फर्म दोनों कीमत स्वीकारकर्ता थे। अध्याय 4 में ऐसी परिस्थिति में फर्म के व्यवहार का वर्णन किया गया था। हमने विचार किया था कि एक पूर्ण प्रतिस्पर्धी बाज़ार की संरचना एक ऐसी बाज़ार के सदृश्य होती है, जहाँ निम्नलिखित शर्तों को पूरा किया जाता है:

(i) जहाँ फर्म और वस्तु के उपभोक्ताओं की बड़ी संख्या विद्यमान रहती है। सभी फर्मों के सम्मिलित कुल निर्गत की तुलना में प्रत्येक फर्म के द्वारा विक्रय की गयी निर्गत की मात्रा नगण्य ही होती है अर्थात् बहुत कम होती है तथा इसी प्रकार प्रत्येक उपभोक्ता के द्वारा खरीदी गई मात्रा सम्मिलित रूप से सभी उपभोक्ताओं द्वारा खरीदी गई मात्रा की तुलना में बहुत कम होती है;

(ii) वस्तु का उत्पादन करने अथवा उसे बंद कर रोक देने के लिए फर्में स्वतंत्र होती हैं;

(iii) किसी उद्योग में प्रत्येक फर्म के द्वारा उत्पादित निर्गत तथा अन्य फर्म के द्वारा उत्पादित निर्गत में कोई विशेष अंतर नहीं होता है और किसी अन्य उद्योग का निर्गत इस निर्गत का स्थानापन्न नहीं हो सकता है; और

(iv) उपभोक्ता और फर्म दोनों को निर्गत, आगत और उनकी कीमतों की पूर्ण जानकारी होती है।

इस अध्याय में हम उन परिस्थितियों पर चर्चा करेंगे जहाँ पर इनमें से एक या अधिक शर्तों की पूर्ति नहीं होती है। यदि मान्यता (i) तथा (ii) को छोड़ दिया जाए तो हमें जो बाज़ार संरचना प्राप्त होती है, उसे एकाधिकार तथा अल्पाधिकार कहते हैं। यदि मान्यता (iii) को छोड़ दिया जाए तो हमें एक ऐसी बाज़ार संरचना प्राप्त होती है, जो एकाधिकारी प्रतिस्पर्धा कहलाती है। मान्यता (iv) को छोड़ने पर इसे 'जोखिम के अर्थशास्त्र' के रूप में लिया जाता है। इस अध्याय में हम एकाधिकार, एकाधिकारी प्रतिस्पर्धा और अल्पाधिकारी बाज़ार संरचना का परीक्षण करेंगे।

6.1 वस्तु बाज़ार में सामान्य एकाधिकार

एक बाज़ार संरचना जिसमें एक एकल विक्रेता होता है, एकाधिकार कहलाता है। यद्यपि इस एक वाक्य की परिभाषा में छिपी शर्तों को स्पष्ट रूप से वर्णित करने

की आवश्यकता है। एक एकाधिकारी बाज़ार संरचना में यह आवश्यक है कि एक विशेष वस्तु का एकल उत्पादक हों; उस वस्तु का कोई स्थानापन्न वस्तु नहीं हो और इस स्थिति को लम्बे समय तक बनाए रखने के लिए पर्याप्त प्रतिबंध की आवश्कता होती है, ताकि किसी अन्य फर्म को बाज़ार में प्रवेश करने तथा वस्तु का विक्रय करने से रोकी जा सके।

मैं अपूर्ण प्रतिस्पर्धी हूँ

अन्य बाज़ार संरचनाओं की तुलना में वस्तु बाज़ार में एकाधिकार के परिणामस्वरूप संतुलन में अंतर की जाँच के क्रम में हमें यह कल्पना करनी होगी कि अन्य सभी बाज़ार पूर्ण प्रतिस्पर्धा की स्थिति में होते हैं। खास करके यह भी आवश्यकता होगी कि (i) वस्तु विशेष का बाज़ार माँग की ओर से पूर्णत: प्रतिस्पर्धी हो अर्थात् सभी उपभोक्ता कीमत स्वीकारकर्ता हो; और (ii) उस वस्तु के उत्पादन में प्रयुक्त आगतों का बाज़ार, पूर्ति और माँग दोनों पक्षों की ओर से पूर्णत: प्रतिस्पर्धी हो।

प्रतिस्पर्धी व्यवहार बनाम प्रतिस्पर्धी संरचना

पूर्ण प्रतिस्पर्धी बाज़ार को एक ऐसे बाज़ार के रूप में परिभाषित किया गया है, जहाँ बाज़ार में उत्पादन का विक्रय जिस कीमत पर होता है, उस कीमत को प्रभावित करने में व्यक्तिगत फर्म असमर्थ होती हैं। चूँकि व्यक्तिगत फर्म के निर्गत के किसी भी स्तर के लिए कीमत समान रहती है, इसीलिए ऐसी फर्म किसी भी मात्रा का विक्रय कर पाती हैं, जितनी मात्रा की वह दी हुई बाज़ार कीमत पर बेचने को इच्छुक हैं। अत: इसे अपने उत्पाद के लिए बाज़ार प्राप्त करने के लिए अन्य फर्मों से प्रतिस्पर्धा करने की आवश्यकता नहीं होती है।

यह स्पष्ट रूप से उस धारणा के प्रतिकूल है जो साधारणत: प्रतिस्पर्धा अथवा प्रतिस्पर्धी व्यवहार से समझा जाता है। हम देखते हैं कि कोक और पेप्सी विक्रय का अधिक ऊँचा स्तर अथवा बाज़ार में अधिक हिस्सेदारी प्राप्त करने के लिए अनेक प्रकार से एक–दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते हैं। इसके विपरीत, हम व्यक्तिगत किसानों को अत्यधिक मात्रा में अनाज को बेचने के लिए आपस में प्रतिस्पर्धा करते हुए नहीं देखते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि कोक तथा पेप्सी के पास शीतल पेयों की बाज़ार कीमत को प्रभावित करने का सामर्थ्य है, जबकि व्यक्तिगत किसान के पास नहीं है।

अत: प्रतिस्पर्धी व्यवहार तथा प्रतिस्पर्धी बाज़ार संरचना आमतौर पर वयुत्क्रमानुपातिक रूप से संबद्ध होते हैं। बाज़ार संरचना अधिक प्रतिस्पर्धी होती है तो फर्मों का व्यवहार कम प्रतिस्पर्धी होता है। दूसरी ओर, बाज़ार संरचना कम प्रतिस्पर्धी होती है तो प्रतिस्पर्धी फर्मों का व्यवहार एक–दूसरे के प्रति अधिक प्रतिस्पर्धी होता है। विशुद्ध एकाधिकार इसका स्पष्ट अपवाद है।

यदि उपर्युक्त सभी शर्तों की पूर्ति हो रही हो, तो हम इस स्थिति को एकल वस्तु बाज़ार में एकाधिकार के रूप में परिभाषित करते हैं।

6.1.1 बाज़ार माँग वक्र औसत संप्राप्ति वक्र है

रेखाचित्र 6.1 में बाज़ार माँग वक्र मात्राएँ दर्शाता है जिसे उपभोक्ता विभिन्न कीमतों पर सम्मिलित रूप से खरीदने के इच्छुक हैं। यदि बाज़ार कीमत ऊँचे स्तर p_0 पर हो, तो उपभोक्ता कम मात्रा

q_0 खरीदने के इच्छुक होंगे। दूसरी ओर, यदि बाज़ार कीमत निम्न स्तर p_1 पर हो, तो उपभोक्ता अधिक मात्रा q_1 खरीदने के इच्छुक होंगे। अर्थात् कीमत बाज़ार में उपभोक्ता द्वारा माँग की गई मात्रा को प्रभावित करती है। इसे इस प्रकार भी अभिव्यक्त किया जा सकता है कि उपभोक्ताओं द्वारा खरीदी गई मात्रा कीमत का ह्रासमान फलन है। एकाधिकार फर्म के लिए उपर्युक्त तर्क स्वयं विपरीत दिशा को अभिव्यक्त करता है। वृहत मात्रा में विक्रय करने का एकाधिकार फर्म का निर्णय केवल कम कीमत पर ही संभव है। विलोमत: यदि एकाधिकार फर्म अल्प मात्रा में बेचने के लिए वस्तु को बाज़ार में लाए, तो उसके लिए ऊँची कीमत पर वस्तु को बेचना संभव होगा। अत: एकाधिकार फर्म के लिए कीमत बेची गई वस्तु की मात्रा पर निर्भर करती है। इसे इस तरह भी अभिव्यक्त किया जाता है कि कीमत बेची गई मात्रा का ह्रासमान फलन है। अत: एकाधिकारी फर्म के लिए बाज़ार माँग वक्र पूर्ति की विभिन्न मात्रा के लिए उपलब्ध कीमत को अभिव्यक्त करती है। इस कथन में यह विचार प्रतिबिम्बित हुआ है कि एकाधिकारी फर्म को बाज़ार माँग वक्र का सामना करना पड़ता है।

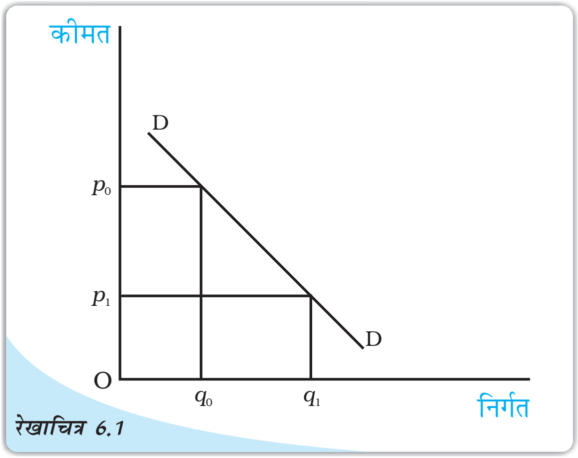

रेखाचित्र 6.1

***बाज़ार माँग वक्र:** बाज़ार माँग वक्र उस मात्रा को दर्शाता है जो उपभोक्ता विभिन्न कीमतों पर सम्मिलित रूप से क्रय करना चाहते हैं।*

उपर्युक्त धारणा पर एक दूसरी दृष्टि से भी विचार किया जा सकता है। चूँकि यह मान लिया जाता है कि फर्म को बाज़ार माँग वक्र का पूर्ण ज्ञान है, इसलिए एकाधिकारी फर्म जिस कीमत पर अपनी वस्तु बेचना चाहती है और वस्तु की जितनी मात्रा बेचना चाहती है, दोनों के बारे में निर्णय ले सकती है। उदाहरण के लिए, रेखाचित्र 6.1 का दुबारा जाँच करने पर हम देखते हैं कि एकाधिकारी फर्म DD वक्र के आकार से अवगत रहती है, इसलिए वह p_0 कीमत पर वस्तु को बेचना चाहती है। ऐसा करने के लिए वह मात्रा q_0 का उत्पादन अथवा विक्रय करेगी क्योंकि p_0 कीमत पर उपभोक्ता q_0 की मात्रा खरीदने को इच्छुक है। यह विचार इस युक्ति में समाहित है कि कीमत 'एकाधिकारी फर्म निर्मात्री होती है।'

पूर्णत: प्रतिस्पर्धी बाज़ार संरचना में फर्म की विषमता को स्पष्ट होना चाहिए। उस स्थिति में फर्म बाज़ार में उतनी मात्रा में वस्तु लाएगी, जितनी लाने को वह इच्छुक होगी और उसे उसी कीमत पर बेचेगी। चूँकि एकाधिकारी फर्म के लिए ऐसा नहीं होता है, इसलिए वस्तु की बिक्री के माध्यम से प्राप्त मुद्रा की मात्रा की पुन: जाँच करनी होगी।

हम एक अनुसूची, एक रेखाचित्र और सरल रेखीय माँग वक्र के सरल समीकरण का प्रयोग करके इसका अभ्यास करें, एक उदाहरण के रूप में माँग फलन को निम्न समीकरण के रूप में मान लें–

$$q = 20 - 2p$$

जहाँ q विक्रय की गई मात्रा तथा p रुपये में कीमत है। इस समीकरण को p के रूप में इस प्रकार लिखा जा सकता है:

$$p = 10 - 0.5q$$

1 से 13 तक q की विभिन्न मूल्यों को प्रतिस्थापित करने पर हम 10 से 3.5 तक की कीमत प्राप्त करते हैं। इन्हें तालिका 6.1 के कॉलम q तथा p में दर्शाया गया है।

इन संख्याओं को रेखाचित्र 6.2 में एक ग्राफ़ में अंकित किया गया है जिसमें कीमत उर्ध्वाधर अक्ष पर एवं मात्राएँ समस्तरीय अक्ष पर दर्शायी गई हैं। वस्तु की विभिन्न मात्राओं के लिए उपलब्ध कीमतों को सरल रेखा D से दर्शाया गया है।

तालिका 6.1: कीमत तथा संप्राप्ति

q	p	*कुल संप्राप्ति*	*औसत संप्राप्ति*	*सीमांत संप्राप्ति*
0	10	0	–	–
1	9.5	9.5	9.5	9.5
2	9	18	9	8.5
3	8.5	25.5	8.5	7.5
4	8	32	8	6.5
5	7.5	37.5	7.5	5.5
6	7	42	7	4.5
7	6.5	45.5	6.5	3.5
8	6	48	6	2.5
9	5.5	49.5	5.5	1.5
10	5	50	5	0.5
11	4.5	49.5	4.5	−0.5
12	4	48	4	−1.5
13	3.5	45.5	3.5	−2.5

वस्तु की बिक्री से फर्म द्वारा प्राप्त कुल संप्राप्ति उत्पाद कीमत और विक्रय की गई मात्रा के गुणनफल के तुल्य होती है। एकाधिकारी फर्म की स्थिति में, कुल संप्राप्ति सरल रेखा में नहीं होती है। इसकी आकृति माँग वक्र की आकृति पर निर्भर करती है। गणितीय रूप से कुल संप्राप्ति को विक्रय की मात्रा के फलन के रूप में दर्शाया जाता है। अतः हमारे उदाहरण में:

$$\textit{कुल संप्राप्ति} = p \times q = (10 - 0.5q) \times q = 10\,q - 0.5\,q^2$$

यह सरल रेखीय समीकरण नहीं है। यह एक द्विघातीय समीकरण है, जिसमें वर्ग वाले पद में एक ऋणात्मक गुणांक होता है। इस प्रकार के समीकरण से एक उल्टा उर्ध्वाधर परवलय निरूपित होता है।

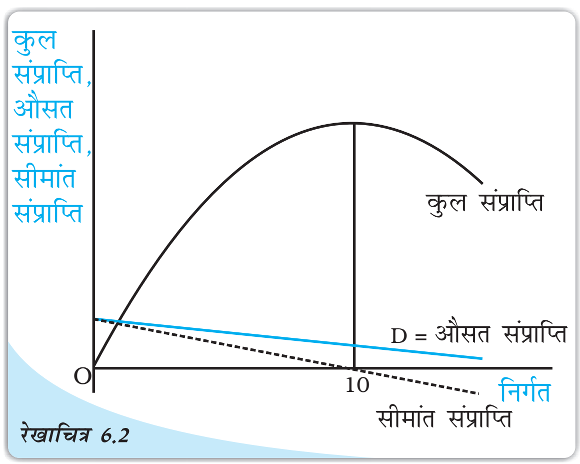

रेखाचित्र 6.2

कुल, औसत तथा सीमांत सम्प्राप्ति वक्रः कुल संप्राप्ति, औसत संप्राप्ति तथा सीमांत संप्राप्ति वक्र यहाँ दर्शाए गए हैं।

तालिका 6.1 में कुल संप्राप्ति कॉलम p तथा q कॉलमों के गुणनफल का प्रतिनिधित्व करता है। ध्यातव्य है कि जैसे-जैसे मात्रा में वृद्धि होती है कुल संप्राप्ति में भी 50 रुपये तक वृद्धि होती है, जब तक कि निर्गत 10 इकाई हो जाता है, निर्गत के इस स्तर के पश्चात कुल संप्राप्ति में गिरावट आनी शुरू हो जाती है। ऐसा ही इस रेखाचित्र 6.2 में स्पष्ट किया गया है।

फर्म द्वारा वस्तु की प्रति इकाई विक्रय से प्राप्त संप्राप्ति को औसत संप्राप्ति कहते हैं। गणितीय रूप में,

$$\text{औसत संप्राप्ति} = \frac{\text{कुल संप्राप्ति}}{\text{मात्रा}}$$

तालिका 6.1 में औसत संप्राप्ति कॉलम, कुल संप्राप्ति के मूल्य में मात्रा q के मूल्य से भाग देकर प्राप्त मूल्य को प्रदान करता है। द्रष्टव्य है कि औसत संप्राप्ति मूल्य p कॉलम के मूल्य के समान रहता है। केवल यही आशा की जाती है।

$$\text{औसत संप्राप्ति} = \frac{\text{कुल संप्राप्ति}}{\text{मात्रा}}$$

चूँकि कुल संप्राप्ति = कीमत × मात्रा, को औसत संप्राप्ति समीकरण में प्रतिस्थापित करने पर,

$$\text{औसत संप्राप्ति} = \frac{(\text{कीमत} \times \text{मात्रा})}{\text{मात्रा}} = \text{कीमत}$$

जैसा कि पहले देखा गया है, p का मूल्य बाज़ार माँग वक्र को प्रदर्शित करता है, जैसा कि रेखाचित्र 6.2 में दर्शाया गया है। अतः औसत संप्राप्ति वक्र ठीक बाज़ार माँग वक्र पर ही बनेगी। यह इस कथन से अभिव्यक्त है कि एकाधिकारी फर्म के लिए बाज़ार माँग वक्र ही औसत संप्राप्ति वक्र होता है।

ग्राफ़ीय रूप में, विक्रय की मात्रा के किसी भी स्तर के लिए औसत संप्राप्ति का मूल्य कुल संप्राप्ति वक्र से प्राप्त किया जा सकता है। इसे रेखाचित्र 6.3 में सरल रचना के माध्यम से दर्शाया गया है। यहाँ जब मात्रा 6 इकाइयाँ हैं, तो समस्तरीय अक्ष पर मूल्य 6 से होकर एक उर्ध्वाधर रेखा गुजरती है। यह रेखा कुल संप्राप्ति वक्र को 'a' द्वारा चिन्हित बिन्दु, जो उर्ध्व अक्ष पर 42 को दर्शाती है, पर काटती है। अब उद्गम O और बिन्दु 'a' को एक सरल रेखा से जोड़ते हैं, उद्गम से किसी एक बिन्दु तक इस किरण की प्रवणता से कुल संप्राप्ति पर औसत संप्राप्ति का मूल्य प्राप्त होता है। इस किरण की प्रवणता 7 के बराबर है। अतः औसत संप्राप्ति का मूल्य 7 है। इसकी जाँच तालिका 6.1 से भी की जा सकती है।

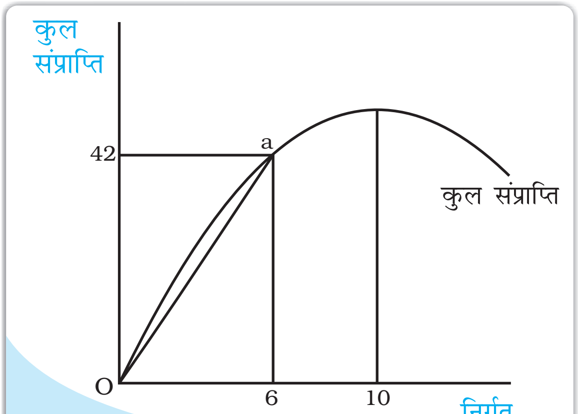

रेखाचित्र 6.3

औसत संप्राप्ति और कुल संप्राप्ति वक्र के बीच संबंध: *निर्गत के किसी भी स्तर पर औसत संप्राप्ति को उद्गम बिन्दु और विचाराधीन निर्गत स्तर के संगत कुल संप्राप्ति वक्र पर एक निर्दिष्ट बिन्दु को जोड़ने वाली रेखा की प्रवणता के द्वारा दिखाया गया है।*

6.1.2 कुल, औसत और सीमांत संप्राप्तियाँ

तालिका 6.1 को सावधानी पूर्वक देखने से यह स्पष्ट होता है कि मात्रा में प्रत्येक इकाई वृद्धि के लिए कुल संप्राप्ति में उसी परिमाण में वृद्धि नहीं होती है। प्रथम इकाई की बिक्री से कुल संप्राप्ति में 0 रु० से परिवर्तन होता है, जब मात्रा 0 इकाई से बढ़कर 1 इकाई होती है तो कुल संप्राप्ति में 9.5 रु० का परिवर्तन होता है। आगे जैसे-जैसे मात्रा में वृद्धि होती जाती है, कुल संप्राप्ति में वृद्धि कम होती है। उदाहरणार्थ– वस्तु की पाँचवीं इकाई के लिए कुल संप्राप्ति में 5.5 रु० (5वीं इकाई के लिए 37.5 रु० से 4 थी इकाई का 32 रु० घटाने पर) की वृद्धि होती है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है निर्गत की 10 इकाई के बाद कुल संप्राप्ति में ह्रास होने लगता है।

इससे स्पष्ट है कि 10 इकाइयों से अधिक मात्रा की बिक्री से कुल संप्राप्ति का स्तर 50 रु० से कम होगा। इस प्रकार 12वीं इकाई से कुल संप्राप्ति में वृद्धि: 48 – 49.50 = – 1.50 अर्थात 1.50 रु० की गिरावट दर्ज़ होती है।

एक अतिरिक्त इकाई की बिक्री से कुल संप्राप्ति में परिवर्तन को सीमांत संप्राप्ति कहते हैं। तालिका 6.1 में इसे अंतिम कॉलम में दर्शाया गया है। प्रथम के बाद सीमांत संप्राप्ति कॉलम की प्रत्येक पंक्ति का मूल्य उस पंक्ति की कुल संप्राप्ति मूल्य से पूर्व पंक्ति के संप्राप्ति मूल्य को घटाने पर प्राप्त मूल्य के समान होता है। पिछले अनुच्छेद में यह दर्शाया गया है कि जैसे-जैसे विक्रय की मात्रा में वृद्धि होती है, कुल संप्राप्ति में भी धीरे-धीरे वृद्धि होती जाती है और 10वीं इकाई के बाद इसमें गिरावट आनी शुरू हो जाती है। इसका अवलोकन सीमांत संप्राप्ति के मूल्य के माध्यम से भी किया जा सकता है, जो कि मात्रा q में वृद्धि होने पर घटती है। मात्रा 10 इकाइयाँ होने पर सीमांत संप्राप्ति का मान ऋणात्मक हो जाता है। रेखाचित्र 6.2 में सीमांत संप्राप्ति को बिन्दु-रेखा के द्वारा चित्रित किया गया है।

ग्राफ़ीय रूप में, सीमांत संप्राप्ति वक्र के मूल्य को कुल संप्राप्ति वक्र की प्रवणता के द्वारा दर्शाया गया है। किसी निष्कोण वक्र की प्रवणता को उस बिन्दु पर वक्र की स्पर्शज्या की प्रवणता के रूप में परिभाषित किया जाता है। इसका चित्रांकन रेखाचित्र 6.4 में किया गया है। कुल संप्राप्ति वक्र पर अंकित 'a' बिन्दु पर सीमांत संप्राप्ति के मूल्य को रेखा L_1 और बिन्दु 'b' पर रेखा L_2 की प्रवणता के द्वारा दर्शाया गया है। द्रष्टव्य है कि दोनों रेखाओं की प्रवणता धनात्मक है किन्तु रेखा L_2 रेखा L_1 से अधिक सपाट है अर्थात् इसकी प्रवणता कम है। मात्रा के एक ही स्तर के लिए सीमांत संप्राप्ति का मूल्य भी कम होगा। जब वस्तु की 10 इकाइयों की बिक्री की जाती है तो कुल संप्राप्ति की स्पर्शज्या समस्तरीय होती है अर्थात् इसकी प्रवणता शून्य होती है। एक ही मात्रा के लिए सीमांत संप्राप्ति का मूल्य शून्य होता है। कुल संप्राप्ति वक्र पर अंकित बिन्दु 'd' पर, स्पर्शज्या की प्रवणता ऋणात्मक होती है, सीमांत संप्राप्ति का मूल्य ऋणात्मक होता है।

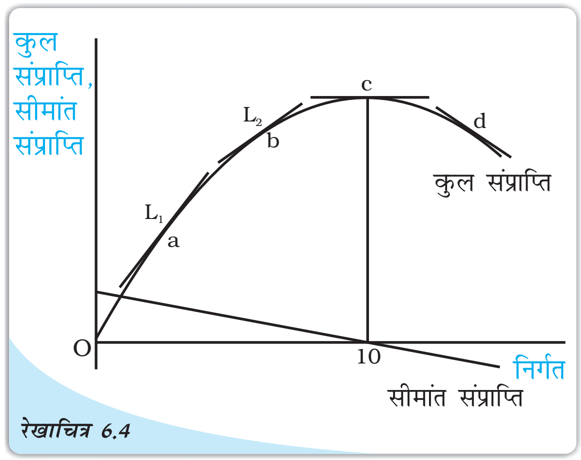

रेखाचित्र 6.4

सीमांत संप्राप्ति और कुल संप्राप्ति वक्रों के बीच संबंध: *निर्गत के किसी भी स्तर पर सीमांत संप्राप्ति को निर्गत के उस स्तर पर कुल संप्राप्ति वक्र की प्रवणता के द्वारा दिखाया गया है।*

निष्कर्षत: कह सकते हैं कि जब कुल संप्राप्ति में वृद्धि होती है, तो सीमांत संप्राप्ति धनात्मक होती है और जब कुल संप्राप्ति में ह्रास होता है तो सीमांत संप्राप्ति ऋणात्मक होती है। औसत संप्राप्ति और सीमांत संप्राप्ति वक्रों में दूसरा संबंध भी देखा जा सकता है। रेखाचित्र 6.2 दर्शाता है कि सीमांत संप्राप्ति वक्र औसत संप्राप्ति वक्र के नीचे रहता है। तालिका 6.1 में भी इसे देखा जा सकता है, जहाँ निर्गत के किसी भी स्तर पर सीमांत संप्राप्ति का मूल्य औसत संप्राप्ति के संगत मूल्य से कम है। हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यदि औसत संप्राप्ति वक्र (अर्थात् माँग वक्र) अतिप्रवण होता है तो सीमांत संप्राप्ति वक्र औसत संप्राप्ति वक्र से अधिक नीचे रहता है। दूसरी

ओर, यदि औसत संप्राप्ति वक्र की प्रवणता कम होती है, तो औसत संप्राप्ति वक्र और सीमांत संप्राप्ति वक्र के बीच उर्ध्वाधर दूरी कम होती है। रेखाचित्र 6.5 (a) में औसत संप्राप्ति वक्र अधिक सपाट है जबकि 6.5 (b) में औसत संप्राप्ति वक्र की प्रवणता अधिक है। वस्तु की समान इकाइयों के लिए औसत संप्राप्ति और सीमांत संप्राप्ति के बीच अंतर पैनल (a) में पैनल (b) की अपेक्षा कम है।

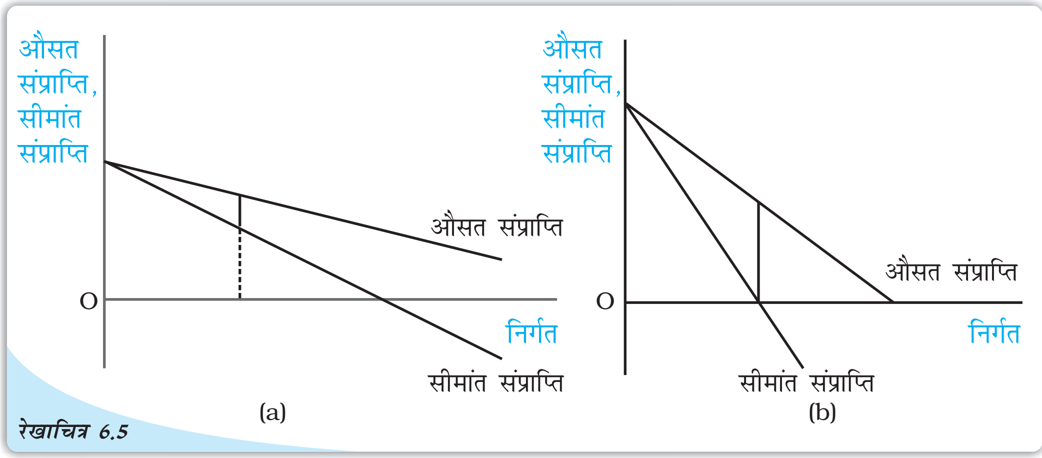

रेखाचित्र 6.5

औसत संप्राप्ति वक्र और सीमांत संप्राप्ति वक्र के बीच संबंध: यदि औसत संप्राप्ति वक्र अतिप्रवण हो तो सीमांत संप्राप्ति वक्र औसत संप्राप्ति वक्र से बहुत नीचे होता है।

6.1.3 सीमांत संप्राप्ति और माँग की कीमत लोच

सीमांत संप्राप्ति के मूल्य का संबंध माँग की कीमत लोच के साथ भी होता है। यहाँ विस्तृत संबंध व्युत्पन्न नहीं हुआ है। एक ही पहलू पर ध्यान देना पर्याप्त है: जब सीमांत संप्राप्ति का मूल्य धनात्मक होता है, तो माँग की कीमत लोच 1 से अधिक होती है और जब सीमांत संप्राप्ति का मूल्य ऋणात्मक होता है, तो इकाई से कम हो जाती है। इसे तालिका 6.2 में देखा जा सकता है, जिसमें वही आँकड़े दर्शाए गए हैं जो तालिका 6.1 में है। जैसे-जैसे वस्तु की मात्रा में वृद्धि होती है, सीमांत संप्राप्ति का मूल्य घटता है और माँग की कीमत लोच का मूल्य भी न्यून हो जाता है। स्मरण कीजिए कि माँग वक्र की लोच उस बिन्दु पर होती है जहाँ कीमत लोच इकाई से अधिक होती है, यह उस बिन्दु पर लोचहीन होती जहाँ कीमत लोच इकाई से कम होती है और जब कीमत लोच 1 के बराबर होती है, तो माँग वक्र इकाई लोच में होता है। तालिका 6.2 में दर्शाया गया है कि जब मात्रा 10 इकाइयों से कम है तब सीमांत संप्राप्ति धनात्मक होती है और माँग वक्र लोचदार है तथा जब मात्रा 10 इकाइयों से अधिक है तब माँग वक्र लोचहीन है। मात्रा की 10 इकाई के स्तर पर माँग वक्र इकाई लोचदार है।

6.1.4 एकाधिकारी फर्म का अल्पकालीन संतुलन

पूर्ण प्रतिस्पर्धा की स्थिति में हम एकाधिकारी फर्म को अधिकतम लाभ कमाने वाले फर्म के रूप में देखते हैं। इस खंड में हम अधिकतम लाभ कमाने के इस व्यवहार का विश्लेषण एकाधिकारी फर्म के द्वारा उत्पादन की मात्रा और कीमत जिस पर उसकी बिक्री की जाती है, को निर्धारण करने के लिए करते हैं। हम मान लेंगे कि एक फर्म उत्पादित वस्तु की मात्रा के भंडार को कायम नहीं रखता है और समस्त उत्पादित मात्रा को बिक्री के लिए प्रस्तुत करता है।

शून्य लागत की सामान्य स्थिति

मान लीजिए कि कोई गाँव अन्य गाँवों से काफी दूरी पर अवस्थित है। इस गाँव में एक ही कुआँ है जिसमें पानी उपलब्ध होता है। सभी निवासी जल की आवश्यकता के लिए पूर्ण रूप से इसी कुएँ पर निर्भर हैं। कुएँ का स्वामी एक ऐसा व्यक्ति है जो अन्य लोगों को कुएँ से जल निकालने के लिए रोकने में समर्थ है सिवाय इसके कि कोई जल का क्रय करे। इस कुएँ से जल का क्रय करने वाले स्वयं ही जल निकालते हैं। हम इस एकाधिकारी की स्थिति का विश्लेषण विक्रय जहाँ लागत शून्य है इस जल का परिमाण और उसकी कीमत जिस पर बेची जाती है, का निर्धारण करने के लिए करेंगे।

तालिका 6.2: सीमांत संप्राप्ति और कीमत लोच

q	*p*	*सीमांत संप्राप्ति*	*लोच*
0	10	–	–
1	9.5	9.5	19
2	9	8.5	9
3	8.5	7.5	5.67
4	8	6.5	4
5	7.5	5.5	3
6	7	4.5	2.33
7	6.5	3.5	1.86
8	6	2.5	1.5
9	5.5	1.5	1.22
10	5	0.5	1
11	4.5	−0.5	0.82
12	4	−1.5	0.67
13	3.5	−2.5	0.54

रेखाचित्र 6.6 में रेखाचित्र 6.2 के समान ही कुल संप्राप्ति, औसत संप्राप्ति और सीमांत संप्राप्ति वक्र को दर्शाया गया है। फर्म के द्वारा प्राप्त लाभ, फर्म द्वारा प्राप्त संप्राप्ति से उपगत लागत को घटाने पर प्राप्त संप्राप्ति के बराबर होता है। अर्थात् लाभ = कुल संप्राप्ति – कुल लागत; चूँकि इस स्थिति में कुल लागत शून्य है, जब कुल संप्राप्ति सर्वाधिक है। लाभ सर्वाधिक है तो जैसा कि हमने पहले देखा है कि यह स्थिति तब होती है, जब निर्गत 10 इकाइयाँ हों। यह स्तर तब प्राप्त होता है जब सीमांत संप्राप्ति शून्य के बराबर होता है। लाभ का परिमाण 'a' से समस्तरीय अक्ष तक के उर्ध्वाधर रेखाखंड की लंबाई के द्वारा निर्दिष्ट है।

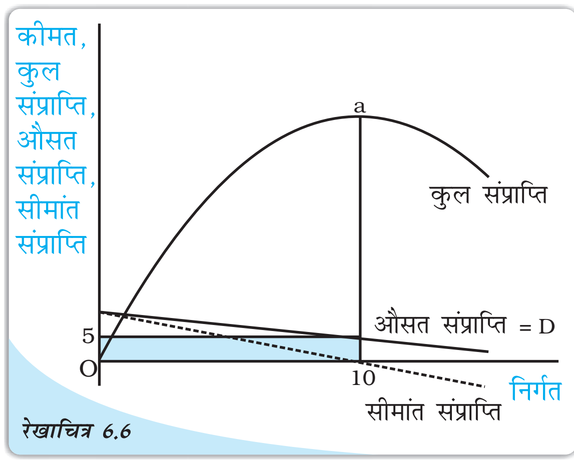

रेखाचित्र 6.6

शून्य लागत के साथ एकाधिकारी का अल्पकालीन संतुलनः निर्गत के जिस स्तर के लिए कुल संप्राप्ति अधिकतम होती है, उस स्तर पर एकाधिकारी का लाभ अधिकतम होता है।

जिस कीमत पर निर्गत का विक्रय होगा उपभोक्ता समग्र रूप से उसी कीमत का भुगतान करेगा। इसे बाज़ार माँग वक्र D द्वारा दिया गया है। 10 इकाई के निर्गत के स्तर पर कीमत 5 रु॰ है। चूँकि एकाधिकारी फर्म के लिए बाज़ार माँग वक्र ही सीमांत संप्राप्ति वक्र है, इसलिए फर्म के द्वारा प्राप्त औसत संप्राप्ति 5 रु॰ है। कुल संप्राप्ति को औसत संप्राप्ति और बिक्री मात्रा के गुणनफल अर्थात् 5 रु॰ × 10 इकाइयाँ = 50 रु॰ के द्वारा प्रदत्त है। यह छायांकित आयत के द्वारा चित्रित है।

पूर्ण प्रतिस्पर्धा के साथ तुलना

उपर्युक्त परिणाम की तुलना हम उस परिणाम से करेंगे, जो पूर्ण प्रतिस्पर्धात्मक बाज़ार संरचना में प्राप्त होगा। कल्पना कीजिए कि इस प्रकार के अनगिनत कुएँ हैं। यदि एक कुएँ का स्वामी 50 रु॰ का लाभ प्राप्त करने के लिए जल की प्रत्येक इकाई के लिए 5 रु॰ मूल्य लगाता है। एक

दूसरे कुएँ का स्वामी यह सोचता है कि उपभोक्ता कम दर पर जल का क्रय करना चाहते हैं। अतः वह 5 रु० से कम अर्थात् 4 रु० प्रति इकाई जल की कीमत निर्धारित करता है। अब उपभोक्ता दूसरे जल विक्रेता से जल का क्रय करने का निर्णय लेंगे और 12 इकाई मात्रा जल की माँग करेंगे, जिससे 48 रु० कुल संप्राप्ति का सृजन होगा। इसी प्रकार, एक दूसरा जल विक्रेता संप्राप्ति की प्राप्ति के लिए और कम कीमत अर्थात् 3 रु० पर जल बेचना चाहता है और जल की 14 इकाइयों से 42 रु० की संप्राप्ति प्राप्त करता है। चूँकि फर्मों की संख्या अनगिनत है, इसलिए कीमत असीमित रूप से नीचे की ओर गिरेगी और तब तक गिरेगी जब तक कि शून्य न हो जाए। इस निर्गत पर अर्थात् 20 इकाई जल का विक्रय किया जाएगा और लाभ शून्य होगा।

इस तुलना के माध्यम से हम देख सकते हैं कि पूर्ण प्रतिस्पर्धात्मक संतुलन के परिणामस्वरूप कम कीमत पर अधिक मात्रा का विक्रय होता है। अब हम उत्पादन की धनात्मक लागत वाले आम उदाहरण पर विचार कर सकते हैं।

धनात्मक लागत का परिचय

कुल लागत के प्रयोग द्वारा विश्लेषण

अध्याय 3 में हमने लागत की संकल्पना पर चर्चा की है तथा रेखाचित्र 6.7 में कुल लागत वक्र की आकृति को कुल लागत के द्वारा चित्रित किया गया है। इस आरेख में कुल संप्राप्ति वक्र को भी दर्शाया गया है। कुल संप्राप्ति से कुल लागत को घटाने पर शेष राशि फर्म का लाभ है। रेखाचित्र में हम देख सकते हैं जब मात्रा q_1 का उत्पादन होता है तो कुल संप्राप्ति$_1$ और कुल लागत$_1$ है। अतः अन्तर कुल संप्राप्ति$_1$ –कुल लागत$_1$ फर्म द्वारा प्राप्त लाभ है। इसे रेखाखंड AB की लम्बाई अर्थात् निर्गत के q_1 स्तर पर कुल संप्राप्ति और कुल लागत वक्रों के बीच की उर्ध्वाधर दूरी से दर्शाया गया है। स्पष्ट है कि यह उर्ध्वाधर दूरी निर्गत के विभिन्न स्तरों के लिए बदलती रहती है। जब निर्गत स्तर q_2 से कम हो तो कुल लागत वक्र कुल संप्राप्ति वक्र से ऊपर स्थित होगा अर्थात् कुल लागत कुल संप्राप्ति से अधिक होगी। अतः लाभ ऋणात्मक होता है और फर्म को घाटा होता है।

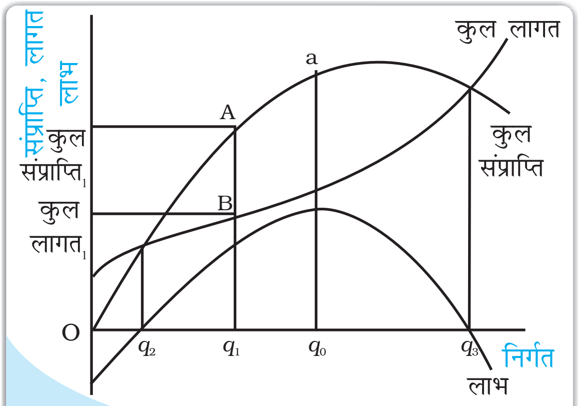

रेखाचित्र 6.7

कुल लागत के पदों में एकाधिकारी का संतुलनः एकाधिकारी का लाभ निर्गत के उस स्तर पर अधिकतम होता है, जिस पर कुल संप्राप्ति और कुल लागत के बीच उर्ध्वाधर दूरी अधिकतम होती है और कुल संप्राप्ति वक्र कुल लागत के ऊपर अवस्थित होता है।

यही स्थिति q_3 से अधिक निर्गत स्तर के लिए भी विद्यमान रहती है। अतः फर्म केवल q_2 और q_3 के बीच के निर्गत स्तर पर ही धनात्मक लाभ प्राप्त करता है। जहाँ कुल संप्राप्ति वक्र कुल लागत वक्र के ऊपर अवस्थित होता है। एकाधिकारी फर्म निर्गत के उस स्तर का चयन करेंगे, जिस पर उसका लाभ अधिकतम होगा। यह निर्गत का वह स्तर होगा जिसके लिए कुल संप्राप्ति और कुल लागत के बीच उर्ध्वाधर दूरी अधिकतम होगी तथा कुल संप्राप्ति वक्र कुल लागत वक्र के ऊपर अवस्थित होगा, अर्थात् कुल संप्राप्ति – कुल लागत अधिकतम है। ऐसा निर्गत q_0 के स्तर पर होता है। यदि कुल संप्राप्ति – कुल लागत के अन्तर की गणना की जाए और एक

ग्राफ़ के रूप में इसे दर्शाया जाय तो यह रेखाचित्र 6.7 में अंकित लाभ के जैसा होगा। ध्यातव्य है कि निर्गत स्तर q_0 पर लाभ वक्र का मूल्य अधिकतम है।

जिस कीमत पर इस निर्गत का विक्रय किया जाता है, उपभोक्ता वस्तु की इस q_0 मात्रा के लिए उस कीमत को अदा करने के इच्छुक होते हैं। अतएव, एकाधिकारी फर्म माँग वक्र पर संबंधित मात्रा स्तर q_0 पर कीमत का निर्धारण करेगी।

औसत और सीमांत वक्र के प्रयोग द्वारा

उपर्युक्त विश्लेषण को औसत एवं सीमांत संप्राप्ति और औसत तथा सीमांत लागत के प्रयोग द्वारा भी विश्लेषित किया जा सकता है। यद्यपि यह विधि थोड़ी जटिल है, किन्तु इससे प्रक्रम को अधिक स्पष्टता से प्रस्तुत किया जा सकता है।

रेखाचित्र 6.8 में औसत लागत, तथा सीमांत लागत वक्र को माँग (औसत संप्राप्ति) वक्र तथा सीमांत संप्राप्ति वक्र के साथ दर्शाया गया है।

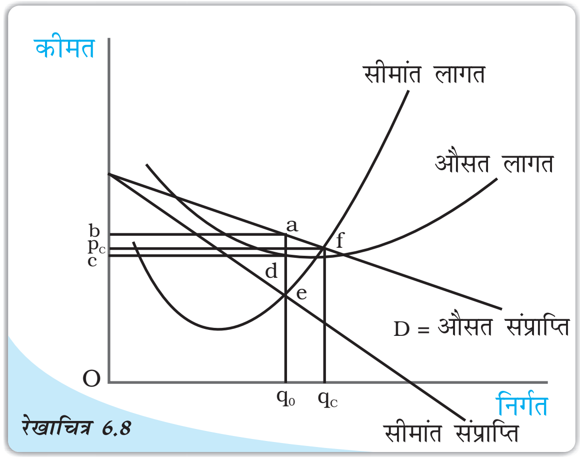

रेखाचित्र 6.8

***औसत और सीमांत वक्र के पदों में एकाधिकारी का संतुलनः** एकाधिकारी का लाभ निर्गत के उस स्तर पर अधिकतम होता है जिसके लिए सीमांत संप्राप्ति = सीमांत लागत तथा सीमांत लागत में वृद्धि हो रही है।*

द्रष्टव्य है कि q_0 के नीचे निर्गत स्तर पर सीमांत संप्राप्ति स्तर सीमांत लागत स्तर से ऊँचा है। तात्पर्य यह है कि वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई के विक्रय से प्राप्त कुल संप्राप्ति में वृद्धि उस अतिरिक्त इकाई की उत्पादन लागत में वृद्धि से अधिक होती है। इसका अर्थ यह है कि निर्गत की एक अतिरिक्त इकाई से अतिरिक्त लाभ का सृजन होगा। चूँकि लाभ में परिवर्तन = कुल संप्राप्ति में परिवर्तन – कुल लागत में परिवर्तन। अतः यदि फर्म q_0 से कम स्तर पर निर्गत का उत्पादन कर रही है, तो वह अपने निर्गत में वृद्धि लाना चाहेगी क्योंकि इससे उसके लाभ में बढ़ोत्तरी होगी। जब तक सीमांत संप्राप्ति वक्र सीमांत लागत वक्र के ऊपर अवस्थित है, तब तक उपर्युक्त तर्क का अनुप्रयोग होगा। अतः फर्म अपने निर्गत में वृद्धि करेगी। इस प्रक्रम में तब रूकावट आयेगी, जब निर्गत का स्तर q_0 पर पहुँचेगा, क्योंकि इस स्तर पर सीमांत संप्राप्ति और सीमांत लागत समान होंगे और निर्गत में वृद्धि से लाभ में किसी प्रकार की वृद्धि नहीं होगी।

दूसरी ओर, यदि फर्म q_0 से अधिक मात्रा में निर्गत का उत्पादन करती है तो सीमांत लागत सीमांत संप्राप्ति से अधिक होती है। अभिप्राय यह है कि निर्गत की एक इकाई कम करने से कुल लागत में जो कमी होती है, वह इस कमी के कारण कुल संप्राप्ति में हुई हानि से अधिक होती है। अतः फर्म के लिए यह उपयुक्त है कि वह निर्गत में कमी लाए। यह तर्क तब तक समीचीन होगा जब तक सीमांत लागत वक्र सीमांत संप्राप्ति वक्र के ऊपर अवस्थित होगा और फर्म अपने निर्गत में कमी को जारी रखेगी। एक बार निर्गत स्तर के q_0 पर पहुँचने पर सीमांत लागत और सीमांत संप्राप्ति के मूल्य समान हो जाएँगे और फर्म अपने निर्गत में कमी को रोक देगी।

चूँकि फर्म अनिवार्य रुप से q_0 निर्गत स्तर पर पहुँचती है, इसलिए इस स्तर को निर्गत का संतुलन स्तर कहते हैं। चूँकि निर्गत का यह संतुलन स्तर उस बिन्दु के संगत होता है जहाँ सीमांत

संप्राप्ति सीमांत लागत के बराबर होती है। इस समानता को एकाधिकारी फर्म द्वारा उत्पादित निर्गत के लिए संतुलन की शर्त कहते हैं।

q_0 निर्गत के संतुलन स्तर पर, औसत लागत बिंदु 'd' द्वारा दी गई है, जहाँ उर्ध्वाधर रेखा q_0 से औसत लागत वक्र को काटती है। अतः औसत लागत को dq_0 के ऊँचाई पर दर्शाया गया है। चूँकि कुल लागत, औसत लागत और उत्पादित मात्रा q_0 के गुणनफल के बराबर होती है, इसीलिए इसे आयत Oq_0dc के द्वारा दर्शाया गया है।

जैसा कि पहले दर्शाया गया है कि एक बार उत्पादित निर्गत के मात्रा का निर्धारण होने पर, जिस कीमत पर निर्गत का विक्रय होता है, वह उस परिमाण से निर्धारित होती है जिसका उपभोक्ता भुगतान करना चाहता है। इसे बाज़ार माँग वक्र के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। अतः कीमत बिन्दु a से दर्शायी गई है, जहाँ q_0 से होकर उर्ध्वाधर रेखा बाज़ार माँग वक्र d से मिलती है। इससे aq_0 की ऊँचाई द्वारा दर्शायी गई कीमत प्राप्त होती है। चूँकि फर्म द्वारा प्राप्त कीमत निर्गत की प्रति इकाई संप्राप्ति होती है, अतः यह फर्म के लिए औसत संप्राप्ति है। कुल संप्राप्ति, औसत संप्रप्ति और निर्गत q_0 के स्तर का गुणनफल होती है, इसलिए इसे आयत Oq_0ab के क्षेत्रफल के रूप में दर्शाया गया है।

आरेख से स्पष्ट है कि आयत Oq_0ab का क्षेत्रफल आयत Oq_0dc के क्षेत्रफल से बड़ा है अर्थात कुल संप्राप्ति कुल लागत से अधिक है। आयत cdab का क्षेत्रफल इनके बीच का अन्तर है अतः लाभ = कुल संप्राप्ति – कुल लागत को cdab के क्षेत्रफल से प्रदर्शित किया जा सकता है।

पुनः पूर्ण प्रतिस्पर्धा से तुलना

अब हम एकाधिकारी फर्म की संतुलन मात्रा और कीमत की तुलना पूर्ण प्रतिस्पर्धी फर्म की संतुलन मात्रा और कीमत से करें। याद रहे कि पूर्ण प्रतिस्पर्धी फर्म कीमत स्वीकारकर्ता होती है। यदि बाज़ार कीमत दी हुई हो तो पूर्ण प्रतिस्पर्धात्मक बाज़ार संरचना में फर्म यह विश्वास करती है कि वह निर्गत की मात्रा का अधिक या कम उत्पादन करके कीमत को नहीं बदल सकती है। मान लीजिए कि ऊपर हमने जिस फर्म के संबंध में विचार किया है, वह विश्वास करती है कि वह पूर्णतः प्रतिस्पर्धी फर्म है। दिए गए निर्गत स्तर q_0 और वस्तु की कीमत $aq_0 = Ob$ पर वह कीमत के Ob पर स्थिर रहने की अपेक्षा करेगा और इस प्रकार वह निर्गत की प्रत्येक अतिरिक्त इकाई को उसी कीमत पर बेचना चाहेगी। चूँकि एक अतिरिक्त इकाई की उत्पादन लागत जो कि सीमांत लागत भी है, eq_0 द्वारा प्रदर्शित है, जो कि aq_0 से कम है। फर्म पुनः यह विश्वास करती है कि अधिक मात्रा में निर्गत का उत्पादन करने से उसके लाभ में वृद्धि होगी। यह तब तक चलता रहेगा जब तक कीमत सीमांत लागत से अधिक रहेगी। रेखाचित्र 6.8 में बिन्दु f पर जहाँ पर सीमांत लागत वक्र माँग वक्र को काटता है, फर्म द्वारा प्राप्त कीमत सीमांत लागत के बराबर हो जाती है। अतः अब यह पूर्ण प्रतिस्पर्धी फर्म द्वारा नहीं माना जाता है कि निर्गत में वृद्धि के लिए यह स्थिति लाभकारी होगी। इसका कारण यह है कि कीमत = सीमांत लागत को पूर्णतः प्रतिस्पर्धी फर्म के लिए संतुलन की शर्त के रूप में माना जाता है।

आरेख से प्रदर्शित होता है कि निर्गत के इस स्तर पर उत्पादित मात्रा q_c, q_0 से ज़्यादा है। उपभोक्ता द्वारा अदा की गई कीमत भी p_c पर न्यून होगी। इससे निष्कर्ष निकलता है कि पूर्णतः प्रतिस्पर्धी बाज़ार एकाधिकारी फर्म की तुलना में वस्तु की अत्यधिक मात्रा में उत्पादन और बिक्री प्रदान करता है। पूर्ण प्रतिस्पर्धा में वस्तु की कीमत एकाधिकार की तुलना में न्यून होती है तथा इसमें फर्म द्वारा प्राप्त लाभ भी एकाधिकार की तुलना में कम होता है।

दीर्घकाल में

अध्याय – 5 में, हमने देखा कि निर्बाध प्रवेश और बहिर्गमन के साथ पूर्ण प्रतिस्पर्धी फर्म शून्य लाभ प्राप्त करती है। उसका कारण यह था कि यदि फर्म के द्वारा अर्जित लाभ धनात्मक है, बाज़ार में अधिक से अधिक फर्म प्रवेश करेगी और निर्गत में वृद्धि होगी जिससे कीमत घट जायेगी। और इससे विद्यमान फर्म के उपार्जन में ह्रास होने लगेगा। उसी तरह यदि फर्म घाटे की स्थिति में हो तो कुछ फर्म उत्पादन बंद कर देंगी और निर्गत में गिरावट आएगी, जिससे कीमत में वृद्धि होगी और मौजूद फर्म के उपार्जन में बढ़ोतरी होगी। एकाधिकारी फर्म के लिए ऐसी स्थिति नहीं होती है। चूँकि अन्य फर्मों के बाज़ार में प्रवेश पर प्रतिबंध रहता है इसीलिए एकाधिकारी फर्म का उपार्जन दीर्घकाल तक बना रहता है।

कुछ आलोचनात्मक मत

ऊपर प्रस्तुत परिणाम से वस्तु बाज़ार में एकाधिकारी प्रभाव का अत्यन्त ऋणात्मक रेखाचित्र प्रदर्शित होता है। एकाधिकारी फर्म का लाभ पूर्णरूपेण उपभोक्ताओं पर निर्भर करता है। एकाधिकारी फर्म दीर्घकाल में भी उच्च और धनात्मक लाभ प्राप्त करती है। दूसरी ओर, उपभोक्ताओं को निर्गत की अत्यल्प मात्रा प्राप्त होती है और उपभोग की प्रत्येक इकाई के लिए अधिक कीमत अदा करनी पड़ती है।

यद्यपि एकाधिकार के संबंध में अर्थशास्त्रियों ने भिन्न-भिन्न मत प्रकट किये हैं। प्रथम, यह तर्क दिया जाता है कि ऊपर जिस प्रकार के एकाधिकार की व्याख्या की गई है, वह वास्तविक जगत में नहीं पाया जाता है। क्योंकि हर वस्तु का कोई न कोई स्थानापन्न होता ही है। ऐसा इसीलिए होता है, चूँकि अंतिम विश्लेषण में आय की प्राप्ति के लिए सभी वस्तु उत्पादक फर्मों की प्रतिस्पर्धा उपभोक्ताओं पर ही निर्भर करती है।

दूसरा तर्क यह है कि शुद्ध एकाधिकार की स्थिति में भी फर्मों के बीच प्रतिस्पर्धा होती है। इसका कारण यह है कि अर्थव्यवस्था कभी स्थिर नहीं होती। इसमें नयी वस्तुओं तथा तकनीकों का आगमन सतत जारी रहता है जो कि एकाधिकारी फर्म द्वारा उत्पादित वस्तुओं का निकट स्थानापन्न होती है। अतः दीर्घकाल में एकाधिकारी फर्म हमेशा प्रतिस्पर्धा की स्थिति में होती है। अल्पकाल में भी प्रतिस्पर्धा की चिन्ता बनी रहती है और एकाधिकारी फर्म उस तरह से व्यवहार नहीं कर पाती है जैसा कि हमने ऊपर वर्णन किया है।

एक अन्य मत के अनुसार, एकाधिकार का अस्तित्व समाज के लिए लाभकारी होगा। चूँकि एकाधिकारी फर्म अत्यधिक लाभ अर्जित करती है, इसीलिए उनके पास अनुसंधान और विकास कार्य के लिए पर्याप्त निधि होती है। किन्तु पूर्ण प्रतिस्पर्धी फर्म इस कार्य को पूरा करने में असमर्थ होती है। इस प्रकार अनुसंधान करके एकाधिकारी फर्म अच्छी गुणवत्ता वाली वस्तुओं का उत्पादन कर पाती है। एकाधिकारी फर्म अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के प्रयोग से अपनी सीमांत लागत को इतना न्यून कर लेती है कि निर्गत का संतुलन स्तर पूर्ण प्रतिस्पर्धा की स्थिति से अधिक होता है। जहाँ

सीमांत लागत = सीमांत संप्राप्ति पूर्ण प्रतिस्पर्धा की स्थिति में भी इससे अधिक हो सकती है।

6.2 अन्य पूर्ण प्रतिस्पर्धारहित बाज़ार

6.2.1 एकाधिकारी प्रतिस्पर्धा

अब हम एक ऐसी बाज़ार संरचना पर विचार करें, जिसमें फर्मों की संख्या काफी अधिक होती है और फर्मों का निर्बाध प्रवेश और बहिर्गमन होता है, किन्तु उनके द्वारा उत्पादित वस्तु सजातीय नहीं होती हैं। ऐसी बाज़ार संरचना को एकाधिकारी प्रतिस्पर्धा कहते हैं।

इस प्रकार की संरचना आमतौर पर देखने को मिलती है। बिस्कुट का उत्पादन करने वाले अनेक फर्म इसके उदाहरण हैं। किन्तु कई बिस्कुट कुछ ब्रांड नाम से जुड़े हैं और इस ब्रांड नाम और पैकेजिंग के कारण ये एक–दूसरे से भिन्न हैं। इनके स्वाद में भी थोड़ा अंतर होता है। धीरे–धीरे उपभोक्ता को एक विशेष ब्रांड वाले बिस्कुट खाने की आदत पड़ जाती है अथवा किसी कारण से वे इसके प्रति निष्ठावान हो जाते हैं। अत: वे इस विशेष ब्रांड के बिस्कुट को दूसरे बिस्कुट से स्थानापन्न करने के लिए जल्द इच्छुक नहीं होते हैं। किन्तु यदि कीमत में अन्तर अधिक हो तो उपभोक्ता दूसरे ब्रांड वाले बिस्कुट का चयन करना चाहेंगे। उपभोक्ता के लिए उपयोग की गई ब्रांड को बदलने के लिए आवश्यक कीमत अन्तर भिन्न–भिन्न हो सकते हैं। अत: यदि किसी विशेष ब्रांड की कीमत कम हो तो उपभोक्ता उस ब्रांड का उपयोग करने के लिए उसकी ओर शिफ्ट होंगे। पुन: कीमत कम करने से अधिक–से–अधिक उपभोक्ताओं का कम कीमत वाली ब्रांड की ओर स्थानान्तरण होगा।

अत: फर्म के सम्मुख माँग वक्र पूर्ण प्रतिस्पर्धा की स्थिति में समस्तरीय (पूर्ण लोचदार) नहीं होगा। फर्म के सम्मुख माँग वक्र एकाधिकार की तरह बाज़ार माँग वक्र भी नहीं है। एकाधिकारी प्रतिस्पर्धा की स्थिति में फर्म कम कीमत पर माँग में अल्प वृद्धि की अपेक्षा रखता है। अत: सीमांत संप्राप्ति औसत संप्राप्ति से थोड़ी कम होती है। जब सीमांत संप्राप्ति सीमांत लागत से अधिक होती है तो फर्म अपने निर्गत की मात्रा में वृद्धि करती है। चूँकि सीमांत संप्राप्ति कीमत से कम है, इसलिए पूर्ण प्रतिस्पर्धा की तुलना में निर्गत के कम स्तर पर सीमांत संप्राप्ति सीमांत लागत के बाराबर होगी।

इसी कारण, एकाधिकारी प्रतिस्पर्धा फर्म में पूर्ण प्रतिस्पर्धा फर्म की तुलना में निर्गत की कम मात्रा का उत्पादन होता है। चूँकि उपभोक्ता वस्तु की प्रति इकाई पर अधिक कीमत चुकाने के इच्छुक हैं इसीलिए दिए हुए निम्न निर्गत स्तर पर वस्तु की कीमत पूर्ण प्रतिस्पर्धा की तुलना में ऊँची होगी।

ऊपर वर्णित स्थिति अल्पकाल में विद्यमान रहती है। किन्तु एकाधिकारी प्रतिस्पर्धा की बाज़ार संरचना में नये फर्मों का निर्बाध रूप से प्रवेश होता है। यदि उद्योग में फर्म अल्पकाल में धनात्मक लाभ प्राप्त कर रहा हो, तो इससे नये फर्म उस उद्योग में वस्तु के उत्पादन को शुरू करने के लिए आकर्षित होंगे (बाज़ार में प्रवेश के लिए)। जैसे–जैसे वस्तु का उत्पादन बढ़ेगा, बाज़ार में कीमत उसी तरह गिरने लगेगी। यह स्थिति तब तक जारी रहेगी जब तक लाभ शून्य न हो जाए। इसके बाद उस उद्योग विशेष में प्रवेश नये फर्मों में कोई आकर्षण नहीं रह जाएगा। विलोमत: यदि अल्पकाल में उद्योग में फर्मों को घाटा हो रहा हो, तो कुछ फर्म उत्पादन बंद कर देंगी (बाज़ार से बहिर्गमन) और वस्तु की कुल उत्पादन की मात्रा में गिरावट से वस्तु की कीमत ऊँची हो जाएगी। एक बार लाभ शून्य होने के बाद प्रवेश और बहिर्गमन रूक जाएगा तथा इससे दीर्घकाल में संतुलन प्राप्त होगा।

चूँकि अब भी प्रत्येक फर्म की निर्गत की माँग में इस ब्रांड की कीमत में गिरावट के साथ वृद्धि जारी रहती है, इसीलिए दीर्घकाल कुल निर्गत के निम्न स्तर और पूर्ण प्रतिस्पर्धा की तुलना में ऊँची कीमत से संबद्ध होता है।

6.2.2 अल्पाधिकार में फर्म कैसे व्यवहार करती हैं?

यदि किसी वस्तु विशेष के बाज़ार में एक से अधिक विक्रेता हों, किन्तु विक्रेताओं की संख्या अत्यल्प हों तो उस बाज़ार संरचना को अल्पाधिकार कहते हैं। अल्पाधिकार की एक विशेष स्थिति जिसमें केवल दो विक्रेता होते हैं उसे द्वि–अधिकार कहते हैं। इस बाज़ार संरचना के विश्लेषण में हम मान लेते हैं कि दोनों फर्मों द्वारा बेचे गए उत्पाद सजातीय हैं और किसी दूसरे फर्म द्वारा उस उत्पाद के स्थानापन्न उत्पाद का उत्पादन नहीं किया जाता है।

किसी एक फर्म के निर्गत का निर्णय अनिवार्य रूप से बाज़ार कीमत तथा अन्य फर्मों के द्वारा बेची गई मात्रा अर्थात् कुल संप्राप्ति को भी प्रभावित करेगा। अतः केवल यह अपेक्षा की जाती है कि अपने लाभ को बचाने के लिए प्रतिक्रिया व्यक्त करेंगे। यह प्रतिक्रिया नये निर्णयों के द्वारा उनके निर्गत की मात्रा तथा कीमत के संबंध में होगी। इस सिद्धांत को स्थापित करने की कई विधियाँ हैं। हम दो विधियों की संक्षेप में व्याख्या करेंगे।

प्रथमः द्वि–अधिकारी फर्म आपस में साँठ–गाँठ कर यह निर्णय ले सकता है कि वे एक–दूसरे से प्रतिस्पर्धा नहीं करेंगे और एक साथ दोनों फर्मों के लाभ को अधिकतम स्तर तक ले जाने का प्रयत्न करेंगे। इस स्थिति में दोनों फर्म एकल एकाधिकारी की तरह व्यवहार करेंगे, जिनके पास दो अलग–अलग वस्तु का उत्पादन करने वाले कारखाने होंगे।

द्वितीयः एक ऐसे द्वि–अधिकार की स्थिति को लीजिए, जिसमें दो फर्मों में प्रत्येक यह निर्णय लेता है कि अपने लाभ को अधिकतम करने के लिए वह वस्तु की कितनी मात्रा का उत्पादन करे। यहाँ यह मान लिया जाता है कि उनकी वस्तु की मात्रा की पूर्ति को कोई अन्य फर्म प्रभावित नहीं करेंगे।

हम एक सरल उदाहरण के प्रयोग द्वारा इस प्रभाव की परीक्षा कर सकते हैं, जिसमें द्वि–अधिकारी फर्म की लागत शून्य हो। खंड 6.1.4 में शून्य लागत की सामान्य स्थिति में एकाधिकार की स्थिति में एक ऐसी ही स्थिति पर पहले भी विचार किया गया है। याद कीजिए कि वहाँ पर हमने स्थिति को सरल रेखीय माँग वक्र के माध्यम से दर्शाया है। शून्य कीमत पर उपभोक्ता की माँग की अधिकतम मात्रा 20 इकाइयाँ थी और यह पूर्ण प्रतिस्पर्धात्मक बाज़ार संरचना में संतुलन की स्थिति थी। एकाधिकारी संरचना में 5 रु॰ की कीमत पर पूर्ति की मात्रा 10 इकाइयाँ थी। द्रष्टव्य है कि जब माँग वक्र सरल रेखा में है और कुल लागत शून्य है तो एकाधिकारी वस्तु की अधिकतम मात्रा को आधी मात्रा की पूर्ति से अधिक लाभप्रद पाता है। आइए, इसी उदाहरण का प्रयोग दो द्वि–अधिकारी फर्मों की स्थिति में परिणाम की जाँच के लिए करें। यहाँ दो फर्म A और B हैं जो उपर्युक्त विधि से व्यवहार करते हैं।

कल्पना कीजिए कि फर्म B वस्तु की शून्य इकाई की पूर्ति करती है और फर्म A मानती है कि अधिकतम माँग 20 इकाइयाँ है, इसलिए वह इसकी आधी अर्थात् 10 इकाइयों की पूर्ति का निर्णय लेगी। दिया हुआ है कि फर्म 10 इकाइयों की पूर्ति कर रही है और फर्म B मानती है कि अधिकतम माँग 20 इकाइयों में से 10 इकाइयों की (अर्थात् 20–10) माँग अब भी विद्यमान हैं। अतः इसकी आधी पूर्ति अर्थात् 5 इकाइयों की पूर्ति करेगी। चूँकि फर्म B की पूर्ति शून्य से 5 हो गई है, इसीलिए फर्म A यह समझती है कि कुल माँग 15 इकाइयाँ (अर्थात् 20–5) और इसकी आधी पूर्ति अर्थात् 7.5 इकाइयाँ हैं। इस तरह, दोनों फर्मों में एक–दूसरे के प्रति संचलन जारी रहेगी। द्रष्टव्य है कि इससे संतुलन प्राप्त होगा। आइए, इन चरणों की परीक्षा करें।

अतः दोनों फर्म अंततः निम्नलिखित के बराबर निर्गत की पूर्ति करेंगे।

$$\frac{20}{2}-\frac{20}{4}+\frac{20}{8}-\frac{20}{16}+\frac{20}{32}-\frac{20}{64}+\frac{20}{128}\ldots=\frac{20}{3}$$

बाज़ार में पूर्ति की कुल मात्रा दोनों फर्मों की पूर्ति की मात्रा के योग के बराबर है।

$$\frac{20}{3}+\frac{20}{3}=2\times\frac{20}{3}$$

चरण	फर्म	पूर्ति की गई मात्रा
1	B	0
2	A	$\frac{1}{2} \times 20 = \frac{20}{2}$
3	B	$\frac{1}{2}(20 - \frac{1}{2} \times 20) = \frac{20}{2} - \frac{20}{4}$
4	A	$\frac{1}{2}(20 - \frac{1}{2}(20 - \frac{1}{2} \times 20)) = \frac{20}{2} - \frac{20}{4} + \frac{20}{8}$
5	B	$\frac{1}{2}(20 - \frac{1}{2}(20 - \frac{1}{2}(20 - \frac{1}{2} \times 20))) = \frac{20}{2} - \frac{20}{4} + \frac{20}{8} - \frac{20}{16}$

और इसी प्रकार आगे भी।

जो कि एकाधिकार बाज़ार संरचना में पूर्ति की मात्रा से अधिक तथा पूर्ण प्रतिस्पर्धात्मक बाज़ार संरचना में पूर्ति की मात्रा से कम है। चूँकि कीमत पूर्ति की मात्रा पर निर्भर करती है, जिसे सूत्र $p = 10 - 0.5\,q$ इसके लिए $q = \frac{40}{3}$, कीमत $10 - \frac{20}{3} = 3.33$ रु० है। यह एकाधिकार की कीमत से कम और पूर्ण प्रतिस्पर्धा से अधिक है।

धनात्मक लागत की स्थिति में भी केवल गणित जटिल होता है, लेकिन परिणाम एक जैसा रहता है। अनेक बार संचलन और प्रतिसंचलन से होकर दोनों फर्म कुल निर्गत की संतुलन मात्रा पर पहुँचती है। शुद्ध एकाधिकार द्वारा उत्पादन की गई मात्रा से दोनों फर्मों द्वारा एक साथ उत्पादन की गई मात्रा अधिक है तथा उससे कम है जब बाज़ार संरचना पूर्ण प्रतिस्पर्धी था। स्वाभाविक है कि संतुलित बाज़ार कीमत शुद्ध एकाधिकार से कम और पूर्ण प्रतिस्पर्धा से अधिक होगी।

तृतीय, कुछ अर्थशास्त्रियों का तर्क है कि अल्पाधिकार बाज़ार संरचना में वस्तु की अनम्य कीमत होती है, अर्थात् माँग में परिवर्तन के फलस्वरूप बाज़ार कीमत में निर्बाध संचलन नहीं होता है। इसका कारण यह है कि किसी भी फर्म द्वारा प्रारंभ की गई कीमत में परिवर्तन के प्रति एकाधिकारी फर्म प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। यदि एक फर्म यह महसूस करती है कि कीमत में वृद्धि से अधिक लाभ का सृजन होगा और इसीलिए वह अपने निर्गत को बेचने के लिए कीमत में वृद्धि करेगी। अन्य फर्म इसका अनुकरण नहीं कर सकती है। अत: कीमत वृद्धि से बिक्री की मात्रा में भारी गिरावट आएगी, जिससे फर्म की संप्राप्ति और लाभ में गिरावट आएगी। अत: किसी फर्म के लिए कीमत में वृद्धि करना विवेक संगत नहीं होगा। दूसरी ओर, फर्म यह आकलन कर सकती है कि वह अत्यधिक मात्रा में निर्गत को बेचकर अधिक संप्राप्ति और लाभ अर्जित करेगी और इसीलिए वह अपनी वस्तु को कम कीमत पर बेचती है। अन्य फर्म इसी कार्य को एक खतरे के रूप में ग्रहण करेगी और इसीलिए पहले फर्म का अनुकरण करेगी तथा अपनी कीमत को भी कम कर देगी। अत: कम कीमत के कारण कुल विक्रय मात्रा में वृद्धि में सभी फर्म भागीदार होते हैं और आरंभ में जो फर्म कीमत को कम करती है, वह अपने विक्रय की मात्रा में अत्यल्प वृद्धि को ही प्राप्त कर पाती है।

प्रथम फर्म के द्वारा कीमत में अपेक्षाकृत अधिक कमी करने से विक्रय की मात्रा में अपेक्षाकृत अल्प वृद्धि होती है। इस प्रकार इस फर्म को बेलोचदार माँग वक्र का अनुभव होता है और कीमत को कम करने के निर्णय से इसे संप्राप्ति और लाभ की न्यून मात्रा प्राप्त होती है। अत: किसी भी फर्म को प्रचलित कीमत जो कि पूर्ण प्रतिस्पर्धा की अपेक्षा अधिक अनम्य होती है, में परिवर्तन करना विवेकपूर्ण नहीं लगता है।

6.3 सारांश

- जिस बाज़ार संरचना में केवल एक विक्रेता होता है उसे एकाधिकार कहते हैं।
- यदि वस्तु का एक ही विक्रेता हो, वस्तु का कोई स्थानापन्न नहीं हो तथा उद्योग में अन्य फर्मों का प्रवेश वर्जित हो तो उस वस्तु बाज़ार की संरचना एकाधिकार कहलाता है।
- वस्तु की बाज़ार कीमत एकाधिकार फर्म की पूर्ति की मात्रा पर निर्भर करती है। एकाधिकार फर्म के लिए बाज़ार माँग वक्र ही औसत संप्राप्ति वक्र कहलाती है।
- कुल संप्राप्ति वक्र का आकार औसत संप्राप्ति वक्र के आकार पर निर्भर करता है। ऋणात्मक प्रवणता वाली सरल रेखीय माँग वक्र की स्थिति में कुल संप्राप्ति वक्र प्रतिलोमित उर्ध्वाधर परवलय के रूप में होता है।
- किसी भी मात्रा स्तर के लिए औसत संप्राप्ति की माप कुल संप्राप्ति वक्र पर उद्‌गम से संबद्ध बिन्दु की ओर जाती हुई रेखा की प्रवणता से की जाती है।
- किसी भी मात्रा स्तर के लिए सीमांत संप्राप्ति की माप कुल संप्राप्ति वक्र पर अवस्थित संबद्ध बिन्दु की स्पर्शज्या की प्रवणता से की जाती है।
- यदि सीमांत संप्राप्ति का मूल्य औसत संप्राप्ति के मूल्य से कम हो तो औसत संप्राप्ति वक्र नीचे की ओर होती है।
- ऋणात्मक प्रवणता वाला माँग वक्र अति प्रवण होता है और यह सीमांत संप्राप्ति वक्र के नीचे होता है। माँग वक्र तब लोचदार होता है, जब सीमांत संप्राप्ति का मूल्य धनात्मक होता है और यह तब लोचहीन होता है जब सीमांत संप्राप्ति का मूल्य ऋणात्मक होता है।
- यदि एकाधिकारी फर्म की लागत शून्य हो अथवा केवल स्थिर लागत हो तो संतुलन में पूर्ति की मात्रा को उस बिन्दु द्वारा दर्शाया जाता है, जिस पर सीमांत संप्राप्ति शून्य होती है। इसके विपरीत पूर्ण प्रतिस्पर्धा में संतुलन की मात्रा उस बिन्दु द्वारा दर्शाया जाता है, जिस पर औसत संप्राप्ति शून्य होता है।
- एकाधिकार के संतुलन को उस बिन्दु से परिभाषित किया जाता है जिस पर सीमांत संप्राप्ति = सीमांत लागत और सीमांत लागत वृद्धि की स्थिति में होती है। यह बिन्दु उत्पादन की संतुलन मात्रा को बताती है। दी हुई संतुलन मात्रा से माँग वक्र के द्वारा संतुलन कीमत को दर्शाया जाता है।
- एकाधिकारी फर्म का धनात्मक लाभ दीर्घकाल में भी जारी रहता है।
- वस्तु बाज़ार में एकाधिकारी प्रतिस्पर्धा असजातीय वस्तु के कारण उत्पन्न होती है।
- एकाधिकारी प्रतिस्पर्धा में अल्पकालीन संतुलन के परिणामस्वरूप पूर्ण प्रतिस्पर्धा की तुलना में उत्पादन की मात्रा कम होती है और कीमत अधिक होती है। यह स्थिति दीर्घकाल में भी यथावत रहती है, लेकिन दीर्घकाल में लाभ शून्य होता है।
- वस्तु बाज़ार में अल्पाधिकार की स्थिति तब होती है, जब सजातीय वस्तु के उत्पादक फर्मों की संख्या अल्प होती है।

6.4 मूल संकल्पनाएँ

एकाधिकार

एकाधिकारी प्रतिस्पर्धा

अल्पाधिकार

6.5 अभ्यास

1. माँग वक्र का आकार क्या होगा ताकि कुल संप्राप्ति वक्र
   (a) a मूल बिंदु से होकर गुजरती हुई धनात्मक प्रवणता वाली सरल रेखा हो।
   (b) a समस्तरीय रेखा हो।
2. नीचे दी गई सारणी से कुल संप्राप्ति माँग वक्र और माँग की कीमत लोच की गणना कीजिए।

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9
सीमांत संप्राप्ति	10	6	2	2	2	0	0	0	–5

3. जब माँग वक्र लोचदार हो तो सीमांत संप्राप्ति का मूल्य क्या होगा?
4. एक एकाधिकारी फर्म की कुल स्थिर लागत 100 रु॰ और निम्नलिखित माँग सारणी है:

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
कीमत	100	90	80	70	60	50	40	30	20	10

   अल्पकाल में संतुलन मात्रा, कीमत और कुल लाभ प्राप्त कीजिए। दीर्घकाल में संतुलन क्या होगा? जब कुल लागत 1,000 रु॰ हो, तो अल्पकाल और दीर्घकाल में संतुलन का वर्णन करें।
5. यदि अभ्यास 3 का एकाधिकारी फर्म सार्वजनिक क्षेत्र का फर्म हो, तो सरकार इसके प्रबंधक के लिए दी हुई सरकारी स्थिर कीमत (अर्थात् वह कीमत स्वीकारकर्ता है और इसलिए पूर्ण प्रतिस्पर्धात्मक बाज़ार के फर्म जैसा व्यवहार करता है) स्वीकार करने के लिए नियम बनाएगी और सरकार यह निर्धारित करेगी कि ऐसी कीमत निर्धारित हो, जिससे बाज़ार में माँग और पूर्ति समान हो। उस स्थिति में संतुलन कीमत, मात्रा और लाभ क्या होंगे?
6. उस स्थिति में सीमांत संप्राप्ति वक्र के आकार पर टिप्पणी कीजिए, जिसमें कुल संप्राप्ति वक्र (i) धनात्मक प्रवणता वाली सरल रेखा हो (ii) समस्तरीय सरल रेखा हो।
7. नीचे सारणी में वस्तु की बाज़ार माँग वक्र और वस्तु उत्पादक एकाधिकारी फर्म के लिए कुल लागत दी हुई है। इनका उपयोग करके निम्नलिखित की गणना करें:

मात्रा	0	1	2	3	4	5	6	7	8
कीमत	52	44	37	31	26	22	19	16	13

मात्रा	0	1	2	3	4	5	6	7	8
कुल लागत	10	60	90	100	102	105	109	115	125

   (a) सीमांत संप्राप्ति और सीमांत लागत सारणी
   (b) वह मात्रा जिसपर सीमांत संप्राप्ति और सीमांत लागत बराबर है
   (c) निर्गत की संतुलन मात्रा और वस्तु की संतुलन कीमत
   (d) संतुलन में कुल संप्राप्ति, कुल लागत और कुल लाभ
8. निर्गत के उत्तम अल्पकाल में यदि घाटा हो, तो क्या अल्पकाल में एकाधिकारी फर्म उत्पादन को जारी रखेगी?
9. एकाधिकारी प्रतिस्पर्धा में किसी फर्म की माँग वक्र की प्रवणता ऋणात्मक क्यों होती है? व्याख्या कीजिए।
10. एकाधिकारी प्रतिस्पर्धा में दीर्घकाल के लिए किसी फर्म का संतुलन शून्य लाभ पर होने का क्या कारण है?

11. तीन विभिन्न विधियों की सूची बनाइए, जिसमें अल्पाधिकारी फर्म व्यवहार कर सकता है।

12. यदि द्वि-अधिकारी का व्यवहार कुर्नोट के द्वारा वर्णित व्यवहार के जैसा हो, तो बाज़ार माँग वक्र को समीकरण $q = 200 - 4p$ द्वारा दर्शाया जाता है तथा दोनों फर्मों की लागत शून्य होती है। प्रत्येक फर्म के द्वारा संतुलन और संतुलन बाज़ार कीमत में उत्पादन की मात्रा ज्ञात कीजिए।

13. आय अनम्य कीमत का क्या अभिप्राय है? अल्पाधिकार के व्यवहार से इस प्रकार का निष्कर्ष कैसे निकल सकता है?